गज़ल

रात काली है

रात काली है बादल घनेरे भी हैं

पर इन्ही बादलों मे छुपा चाँद है .

गम ना कर संग तेरे कोई हो ना हो

तेरे सत्कर्म का फल तेरे साथ है .

कितने जुल्मो सितम से घिरा ये जहाँ

हर कोई छल फरेबों से बर्बाद है .

जींदा अच्छाईयाँ भी मिली कुछ यहाँ

जिनके कारण यहाँ सुख भी आबाद है .

मत निराशा के संगीत में डुबना

सुन यहीं गूँजता खुशियों का नाद है .

सारी सृष्टी का निर्माण भी कर सके

ऐसी क्षमता लिये तेरे दो हाथ है

महेश शर्मा धार